पाठ-3

अहिंसा की विजय

● **लेखकः भगवतशरण उपाध्याय**

आइए, सीखें : उदारता, परोपकार व अहिंसा के भाव जाग्रत करना ।♦ संज्ञा, विशेषण तथा क्रिया शब्दों की पहचान ।

एक बार महात्मा बुद्ध मगध की राजधानी राजगृह से चलकर श्रावस्ती पहुँचे। श्रावस्ती कोसल की राजधानी थी। वर्तमान अयोध्या के आसपास का प्रदेश उस समय कोसल कहलाता था। वहाँ का राजा प्रसेनजित महात्मा बुद्ध का शिष्य था।

श्रावस्ती पहुँचने पर महात्मा बुद्ध ने राजा को बड़ा व्याकुल पाया। पूछने पर राजा ने कहा-'भगवान्, अंगुलिमाल डाकू से मेरी प्रजा बड़ी त्रस्त है। इसी से मैं बहुत चिन्तित हूँ। क्या करूँ,कुछ समझ में नहीं आता।'

महात्मा बुद्ध ने राजा को धीरज बँधाया और कहा कि मैं तुम्हारी चिन्ता दूर करूँगा।

अंगुलिमाल बड़ा भयंकर डाकू था। उसके अत्याचार से प्रसेनजित की प्रजा त्राहि-त्राहि कर रही थी। उसने हजार आदमियों की हत्या करने की प्रतिज्ञा कर रखी थी। परन्तु वह कितने आदमी मार चुका, इसका हिसाब रखना उसके लिए कठिन काम था। इसके लिए उसने एक युक्ति निकाली। वह जब भी किसी का वध करता तो उसकी एक अंगुली काट लेता। इस प्रकार उसके पास अंगुलियों की एक माला-सी बनती जा रही थी जिसे वह गले में डाले रहता। इसी कारण उसका नाम 'अंगुलिमाल' पड़ गया था।

अंगुलिमाल का नाम सुनकर देश के लोग काँप उठते थे। जिधर से वह निकल जाता, उधर चीख पुकार मच जाती। उसकी क्रूरता की कहानियाँ दूर-दूर के देशों में भी फैली हुई थीं।

प्रसेनजित से बिदा लेकर महात्मा बुद्ध उस जंगल की ओर चल पड़े जिसमें अंगुलिमाल रहता था। जहाँ से जंगल शुरु होता था, वहाँ राजा की ओर से पहरेदार तैनात था जो उधर जानेवालों को सावधान कर देता था और उन्हें रोक देता था। महात्मा बुद्ध भी जब उस ओर चले तो पहरेदार उनके पास पहुँचा, वह जानता था

शिक्षण संकेत -
♦ अहिंसा भाव या दया भाव की कोई कहानी सुनाकर उस पर प्रश्न करते हुए जीवन में अहिंसा का महत्व बताइए। ♦ शुद्ध उच्चारण पर ध्यान देते हुए हाव-भाव के साथ कहानी सुनाएँ। ♦ 'प्र' 'त्र' 'क्त' आदि वर्णों के उच्चारण व लेखन के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करें।

कि बुद्ध जैसे महात्मा का कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता, परन्तु वह अपना कर्त्तव्य समझकर बुद्ध के चरण पकड़कर बोला–महाराज, उधर भयंकर डाकू अंगुलिमाल रहता है। उससे प्राणों का खतरा है। कृपया उधर न जाएँ।

महात्मा बुद्ध हँसे और उन्होंने पहरेदार के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा – 'मेरे लिए किसी प्रकार की चिन्ता न करो।' फिर वे आगे बढ़ गए।

दोपहर का समय था। चारों ओर पेड़ों ने छाया कर रखी थी। जंगल की राह चलना आसान नहीं होता। महात्मा बुद्ध भी कुछ थके–थके से लग रहे थे, पर वे रुके नहीं, आगे बढ़ते गए। उनका हृदय संसार के कष्टों को देखकर दु:खी था, परन्तु अपने ज्ञान से उनके मुख पर सदैव मुस्कान रहती थी, और ललाट सदा चमकता रहता था।

'आदमी आदमी को मारता क्यों है? जीव, जीव को देखकर प्रसन्न क्यों नहीं होता?' इन्ही बातों पर विचार करते हुए महात्मा बुद्ध जंगल की राह बढ़े जा रहे थे कि अचानक उन्हें कोई कठोर और भारी आवाज सुनाई दी, 'ठहर जा।'

ध्यानमग्न होने के कारण महात्मा बुद्ध आगे ही बढ़ते गए। थोड़ी देर में वे ही शब्द फिर सुनाई पड़े 'ठहर जा।'

महात्मा बुद्ध रुक गए। तुरन्त ही घनी झाड़ियाँ चीरती हुई एक विकराल मूर्ति आ खड़ी हुई। ऊँचा कद, काला शरीर, भयानक चेहरा, लाल आँखे, बिखरे बाल, बड़ी–बड़ी मूछें, लम्बी मजबूत भुजाएँ, चौड़ा सीना, हाथ में कटार। निश्चय ही यह मनुष्य नहीं, कोई दैत्य था। उसके गले में अंगुलियों की माला देखकर बुद्ध को पहचानते देर न लगी कि यही अंगुलिमाल डाकू है।

महात्मा बुद्ध ने उस पर अपनी दृष्टि डाली। उनकी नजर में भय न था, प्यार था। उन्होंने प्रेमपूर्वक उस भयानक डाकू से कहा– 'मैं तो ठहर गया, भला तू कब ठहरेगा?'

अंगुलिमाल चकित हो उठा। उसके सामने आनेवालों की हमेशा भय से घिग्घी बँध जाया करती थी। आज तक उसे कोई ऐसा आदमी न मिला था जिसने उससे आँख से आँख मिलाकर बात की हो। यह कौन है जो डरना तो दूर रहा, शांतिपूर्वक मुस्करा रहा है?

महात्मा फिर बोले–'बोल, कब ठहरेगा तू?'

अंगुलिमाल पर महात्मा की बातों का जादू का–सा असर हुआ। वह विनीत स्वर में बोला–'महात्मन्, मैं आपकी बात नहीं समझ सका।'

बुद्ध बोले – अरे, जीवन में तो जन्म से मरण तक वैसे ही बहुत दु:ख हैं। तू उसे अपनी क्रूरता के

कारनामों से क्यों बढ़ा रहा है? मै तो ज्ञान प्राप्त कर बन्धन से छूट गया, पर तू जो इस प्रकार मार-काट का काम अभी करता जा रहा है, इनसे कब छुट्टी लेगा? बोल कब ठहरेगा तू?'

वह डाकू जिसने डर कभी न जाना था, जिससे सारी दुनिया काँपती थी, आज एक निशस्त्र महात्मा के तेज से काँप रहा था। सहसा वह बुद्ध के चरणों में गिर पड़ा और बोला-'महात्मन् मुझे राह दिखाएँ। मेरे सामने अँधेरा-ही-अँधेरा है।'

बुद्ध ने उसको शांति, दया और प्रेम का उपदेश दिया। अंगुलिमाल की आँखें खुल गईं। उसके मन का अन्धकार दूर हो गया। उसने अंगुलियों की माला तोड़ डाली और कटार दूर फेंक दी।

अंगुलिमाल ने हिंसा का जीवन सदा के लिए त्याग दिया और वह भगवान बुद्ध का शिष्य बन गया।

नए शब्द-

त्रस्त = पीड़ित। **ललाट** = भाल,माथा। **विकराल** = भयंकर। **घिग्घी बँध जाना** = भय के मारे बोल न पाना, गला रूँध जाना। **कारनामा** = कृत्य,करतूत। **निशस्त्र** = बिना हथियार के ।

अनुभव विस्तार

1. **वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

(क) सही जोड़ी बनाइए-

मगध की राजधानी	-	श्रावस्ती
कोसल की राजधानी	-	राजगृह
महात्मा बुद्ध का शिष्य	-	अंगुलिमाल
डाकू का नाम	-	प्रसेनजित

(ख) दिए गए विकल्पों से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(अ) महात्मा बुद्ध ने .... को धीरज बँधाया।(राजा,प्रजा)

(ब) अंगुलिमाल .... डाकू था। (सीधा-सादा,भयंकर)

(स) महात्मा बुद्ध ने अंगुलिमाल डाकू से .... कहा। (प्रेम पूर्वक,शान्ति पूर्वक)

2. अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

(अ) राजा प्रसेनजित क्यों चिंतित थे?

(ब) महात्मा बुद्ध ने डाकू को कैसे पहचाना?

(स) 'ठहर जा' किसने किससे कहा था?

(द) महात्मा बुद्ध के चेहरे पर सदैव मुस्कान क्यों रहती थी?

3. लघु उत्तरीय प्रश्न-

(अ) डाकू का नाम अंगुलिमाल क्यों पड़ा?

(ब) पहरेदार के रोकने पर भी महात्मा बुद्ध जंगल में क्यों प्रवेश कर गए?

(स) महात्मा बुद्ध जंगल में जाते समय क्या विचार कर रहे थे?

(द) अंगुलिमाल,का ह्दय परिर्वतन कैसे हुआ?

भाषा की बात-

(1) बोलिए और लिखिए-

प्रतिभा,त्रस्त,त्राहि-त्राहि,युक्ति,निशस्त्र

(2) सही वर्तनी पर गोला लगाइए-

(अ) परसेनजित,पर्सेनजित,प्रसेनजित,प्रसेनजित

(ब) बर्तमान, वर्तमान, वरतमान, वतर्मान

(3) निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

धीरज, सावधान, चीख-पुकार, चिन्ता, दृष्टि, प्रेमपूर्वक

(4) विपरीतार्थी शब्दों की जोड़ी बनाइए -

जन्म	-	दुखी
सुखी	-	अशांति
हिंसा	-	कठिन
सरल	-	मरण
शांति	-	अहिंसा

(5) समानार्थी शब्द पर गोला लगाइए-

(1) पेड़	-	वृक्ष,पानी,आग,जंगल
(2) राह	-	राजा,तरू,रास्ता,हवा
(3) आँख	-	सागर,नदी,नभ,नेत्र

(6) निम्नलिखित पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए और संज्ञा, विशेषण और क्रिया छाँटकर तालिका में लिखिए-

महात्मा बुद्ध रूक गए। तुरंत ही घनी झाडियाँ चीरती हुईएक विकराल मूर्ति आ खड़ी हुई। ऊँचा कद,काला शरीर,भयानक चेहरा,लाल आँखे, बिखरे बाल, बड़ी-बड़ी मूँछें, लम्बी मजबूत भुजाएँ,चौड़ा सीना, हाथ में कटार।

	तालिका	
संज्ञा	**विशेषण**	**क्रिया**

अब करने की बारी

- महावीर स्वामी,गौतम बुद्ध आदि महापुरुषों की जीवनी खोजकर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए।
- प्रस्तुत कहानी को बालसभा में सुनाइए।
- बौद्ध-बिहारों के बारे में जानकारी एकत्रित कीजिए।
- 'जीव,जीव को देखकर प्रसन्न क्यों नहीं होता', विषय पर तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए।